वर्ष 38 अंक : 2 3.3.2015 मंगलवार (मार्च-अप्रैल) शुल्क – प्रति अंक : ₹ 20.00 वार्षिक : ₹ 100.00

भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

बंधुजोड़ी शताब्दी के तृतीय चरण के साथ ही प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी का 80वाँ प्राकट्य पर्व...

आई... श्री हरि एवं उनके साधु के प्रादुर्भाव की मंगल बेला!

मार्च महीने की **28 तारीख – 'रामनौमी' / 'हरिनौमी'** यानी –

* *अवध में – **मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री रामचंद्रजी***

  एवं

  *छपिया में धर्म-भक्ति के घर प्रकटे **बाल घनश्याम** का प्राकट्य पर्व !*
* *भारत की भूमि को अपने पदकंजो से तीर्थत्व प्रदान करने निकले **नीलकंठ ब्रह्मचारी** का प्राकट्य पर्व!*
* *मुक्तानंदस्वामी द्वारा संबोधित **सरजुदास** का प्राकट्य पर्व !*
* *अनंत पतित जीवों का उद्धार करने हेतु, गुरु रामानंदस्वामी द्वारा दीक्षित **सहजानंदस्वामी** का प्राकट्य पर्व!*
* *मानवजाति को सदैव सनाथ करने वाले **पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण** का प्राकट्य दिन!*

सच, पृथ्वी पर भगवान स्वामिनारायण के प्राकट्य से न केवल सद्धर्म का स्थापन हुआ, अपितु आत्यंतिक कल्याण हेतु, अक्षररूप होकर, पुरुषोत्तम को प्राप्त करने का एक राजमार्ग खुला।

वर्षों से पुरातन रूढ़ियों की जंजीरों में जकड़े समाज ने, संसार में रहते हुए, आध्यात्मिक जीवन की कला सीखी।

प्रगट भगवत्स्वरूप संत से अनन्यभाव का संबंध दृढ़ करके पंचदोषों, देहभाव और 'स्व' के भाव से त्वरित परे होकर आसानी से संपूर्ण रूपांतर कराने की करामत मिली।

कर्ताहर्ता 'प्रगट प्रभु' को मानना ही 'जीव का सत्संग' है-यह रहस्य उजागर हुआ।

'मुझे मिले प्रगट प्रभु हितकारी ही हैं' – ऐसी दृढ़ निष्ठा हेतु अद्भुत व अखंड गुणातीत परंपरा मिली!!

सो –

मार्च की **13 तारीख** को जब भगवान स्वामिनारायण के साधु

एवं

ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज से अनन्यभाव का संबंध करके जंगम तीर्थ बने

ऐसे हमारे **प.पू. गुरुजी का 78वाँ प्राकट्य पर्व** निकट आ रहा है,

तब सर्वप्रथम सभी गुणातीत स्वरूपों के श्रीचरणों में अंतर से प्रार्थना कि

प.पू. गुरुजी दीर्घायु होकर निरामय स्वास्थ्य से हमें अपनी लुभावनी-आकर्षक मूर्ति का सुख देते रहें...

प्रातः पौने छः से रात्रि ग्यारह बजे तक लगातार मंदिर के 'चिदाकाश' हॉल में सोफे पर विराजमान –

भक्तों को इज़ीली एसॅसेबल ऐसे प.पू. गुरुजी का संपूर्ण तंत्र प्रभुमय-काकामय तो है ही,

पर अपने प्रभु के प्रति भक्ति अदा करने की वे हमें किस प्रकार शिक्षा देते हैं, यह निम्न प्रसंगों से जानें...

दिल्ली में **प.पू. गुरुजी** आज गुरुस्थान पर हैं। लेकिन, **अपनी पल-पल की क्रियाओं से वे हमें एहसास कराते हैं कि मंदिर या संस्था में एक व्यवस्था हेतु वे हमें जो भी शिक्षा देते हैं, वो केवल सेवकों के लिए**

नहीं, वरन् उन पर भी लागू होती है। 2012 में धनुर्मास दौरान 28 दिसंबर को प.पू. गुरुजी ने खास मंदिर के स्टाफ के लिए, **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज** का निम्न सूत्र लिखा था–

'सभी अपने परिवार का व्यवहार कैसी होशियारी और कम खर्च से निपटाते हैं? वैसी ही समझदारी की ग़रज़ और आत्मबुद्धि व प्रीति दृढ़ करी हो, तो किसी को कुछ भी कहना ही न पड़े। अपना ही माना गया हो, तो प्रभु वैसी प्रेरणा करेंगे।'

ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज द्वारा दिए गए उपरोक्त सूत्र का दर्शन प.पू. गुरुजी की प्रत्येक क्रिया में होता है।

* प्रकाशन कार्य में पेपर की काफ़ी खपत होती है। प.पू. गुरुजी द्वारा सौंपी प्रकाशन की सेवा करते मुक्तों ने तीस वर्षों से देखा है कि प.पू. गुरुजी, मंदिर की विभिन्न प्रवृत्तियों में घिरे होने का बावजूद भी, पत्रिका का प्रूफ चॅक हो जाने के बाद या किसी पत्र का ड्राफ्ट फाईनल हो जाने के बाद, यदि उस काग़ज़ का पिछला भाग कोरा हो, तो वे ध्यानपूर्वक आगे पेन से क्रॉस लगा कर प्रिन्टर के पेपर्स के साथ रखवाते हैं, ताकि उसकी ब्लैंक साईड इस्तेमाल की जाए और पेपर को कोई श्रेडर में न डाल दे। वे ऐसा केवल मंदिर में ही नहीं करते, बल्कि किसी हरिभक्त के यहाँ भी यदि ऐसा कार्य कर रहे हों, तो वहाँ भी ऐसा ध्यान रखते हैं। हाल ही में हरिधाम – 'आत्मीय युवा महोत्सव' के बाद प.पू. गुरुजी 3 जनवरी की सायं अमदावाद के प.भ. परिमलभाई के घर पहुँचे। अगले दिन, 'पोषी पूर्णिमा' के निमित्त संतभगवंत प.पू. साहेबजी को भेजने के लिए, प.पू. गुरुजी ने एक पत्र टाईप करवाया। मंदिर की भांति ही वहाँ भी करेक्शन करते हुए उन्होंने पेपर को रीयूज़ किया। **उनका यह जॅस्चर सिखाता है कि अपनापन केवल अपने तक ही सीमित नहीं होना चाहिए।** अर्थात्–ऐसा नहीं होना चाहिए कि यदि मुफ़्त में कोई चीज मिल रही है, तो उसका कॅरलेस्ली उपयोग करें। ऐसा भक्तिरूपी अनुशासन जीव में बैठ जाए, इस हेतु वे सूचन करने में तनिक भी हिचकते नहीं।
* आजकल के स्पीडी दौर में हर किसी के पास पढ़ने का समय नहीं रहता। सो, पू. मल्कानी अंकल ने 1990 में प.पू. गुरुजी को वचनामृत का हिन्दी अनुवाद करके रॅकॉर्ड करवाने का सुझाव दिया, ताकि ऑडियो कॅसेट द्वारा कार में आते-जाते हुए या घर का काम करते हुए मुक्त उसे सुन सकें। अतः प.पू. आनंदी दीदी ने सर्वप्रथम वचनामृत – गढडा प्रथम प्रकरण का हिन्दी अनुवाद किया। तब कम्प्यूटर की सुविधा तो थी नहीं, सो हाथ से ही एक-एक वचनामृत को आठ-दस बार लिखने की सेवा मिलती। परंतु, रॅकॉर्डिंग हेतु फाइनल प्रतिलिपि तैयार होने के बाद भी प.पू. गुरुजी जब कुछ बदलाव कराते, तो पूरा लिखने के बजाय केवल उतना हिस्सा दूसरे पेपर पर लिखवा कर ग्लूस्टिक से चिपकाने के लिए कहते। उस समय इम्पोर्टेड ग्लूस्टिक नई-नई आनी शुरू हुई थी! पू. मल्कानी अंकल के मैनेजर पू. मंजुल साहेब इस ग्लूस्टिक को भिजवाते थे। एक दिन वचनामृत की प्रतिलिपि तैयार करते हुए सेवक पेपर पर ग्लूस्टिक लगा रहा था कि वहाँ से गुज़रते हुए प.पू. गुरुजी ने देखा कि जिस टेबल पर वह काम हो रहा था, वहाँ नीचे न्यूज़ पेपर या कुछ नहीं रखा हुआ था। तब, **प.पू. गुरुजी** ने टोकते हुए एकदम कहा–

मुफ़्त का चंदन, घिस मेरे नंदन; ऐसे काम करते हो; नीचे पुराना पेपर तो रखो, ताकि टेबल खराब न हो। उनका कहने का मतलब यह था कि ग्लूस्टिक (गोंद) से टेबल का सरफेस चिपचिपा-गंदा हो जाता और अन्य कोई उसे इस्तेमाल करता तो उसके हाथ भी चिपकते। यूँ, प.पू. गुरुजी द्वारा दी गई ऐसी कई छोटी-छोटी सूझ आज भी सचेत करती हैं कि किसी भी वस्तु का दुरुपयोग नहीं होना चाहिए व बचत करनी चाहिए! और... ऐसी बचत कैसे करनी वह प.पू. गुरुजी आज भी सीखते-सिखाते हैं।

* पिछले वर्ष दिसंबर के महीने में रात को प.भ. देवेशजी के साथ कुछ सामान्य बातचीत चल रही थी कि पहले तो लोग वस्तुओं के इस्तेमाल में कितनी किफ़ायत बर्तते थे, लेकिन आज तो यूज़ एण्ड थ्रो में विश्वास करते हैं। ये बातें करते हुए प.पू. गुरुजी ने बताया कि पेस्ट-ट्युब के ढक्कन का मुँह नीचे की ओर रखना चाहिए, ताकि पेस्ट के नीचे आते रहने से वो आसानी से निकल सके। वहाँ उपस्थित एक मुक्त ने बताया कि पेस्ट पूरी तरह निकल जाए, उसके लिए पहले बेलन द्वारा उसे वे आगे लाते हैं। यह सुन कर प.भ. देवेशजी ने फट् कहा– *आप बेलन से दबाने की बात करते हो; मैं तो आज भी ट्युब पूरी खत्म होने के बाद कैंची से काट कर, उंगली से बची हुई पेस्ट इस्तेमाल करता हूँ।* व्यावहारिक दृष्टि से प.भ. देवेशजी को पैसे की कोई कमी नहीं, लेकिन फिर भी इतनी किफ़ायत से जीते हैं! ये बातें तो सामान्य तौर पर खत्म हो गईं। लेकिन, हाल ही में 24 जनवरी को मंदिर के मुक्तों ने देखा कि प.पू. गुरुजी ने अबकी बार पेस्ट खत्म होने के बाद पेस्ट ट्युब को कैंची से काट कर, बची हुई पेस्ट को इस्तेमाल किया। तुरंत ख्याल आया कि उस दिन प.भ. देवेशजी की बात सुन कर प.पू. गुरुजी ने अपने ऊपर अमल किया।

78 साल की आयु में आज भी वे लर्नर हैं।

प.पू. गुरुजी की कार्यशैली का एक पहलू यह भी है कि **संबंध वाले मुक्तों की परवरिश हेतु या उन्हें राजी करके भगवान की मूर्ति लूटने हेतु, वे पैसे की कभी भी परवाह नहीं करते। हाँ, जहाँ उनकी खुद की बात आती है, तो वे हर प्रकार से सचेत रहते हैं।**

उपदेश मात्र से नहीं, बल्कि अपने वर्तन से, व्यावहारिक व आध्यात्मिक सूझ देते हुए, निरंतर प्रकाश फैंकते रहते हमारे गुरुजी हर तरीके से अनोखे हैं।

प.पू. गुरुजी जैसी दिव्य विभूति की साधुता को-आत्मीयता को परखना इतना गहन है कि उसका छोर तो मिल नहीं सकता। परंतु, **गुरुभक्ति की मूर्तस्वरूप प.पू. दीदी** ने इनकी हर एक क्रिया को खूब जाग्रतता से निहारा है और उनका यही उद्यम है कि हमें हुई प्राप्ति को अब समझें और समय व्यर्थ न करते हुए 'प्रगट प्रभु' को पा लें। अतः अबकी बार 12 जनवरी–प.पू. दीदी ने अपने प्राकट्योत्सव पर मुक्तों को जो मार्गदर्शन दिया, उसकी जुगाली करके हम **प.पू. गुरुजी का 78वाँ प्राकट्य पर्व मनाएँ**...

....गुरुजी को कल अचानक अमदावाद जाना पड़ा। पहले से कोई प्रोग्राम नहीं था। लेकिन अभी हम हरिधाम गए थे तब साहेबजी की गुरुजी से बात हुई कि उन्हें ऐसे हार्ट का प्रॉब्लम आया है, तो सर्जरी पर जाना पड़े। तब गुरुजी ने बोला–साहेब, जब भी ऐसा हो, आप मुझे जरूर बताना। मैं आपसे मिलने आ जाऊंगा। वहां डिसाइड हुआ होगा कि 14 जनवरी को साहेबजी ओपन हार्टसर्जरी के लिए अमेरिका जा रहे हैं। सो, कल ही अचानक गुरुजी, ब्रह्मज्योति जाने, अमदावाद चले गए और आज रात को लौट भी आएंगे।

गुरुजी के इस जॅस्चर से हमें जानने को मिलता है कि इनका आपस में अंतर का कैसा लगाव होगा! इनकी आपस में-अंतर में कितनी आत्मीयता होगी? गुरुजी की हेल्थ के बारे में भी हम जानते हैं। अभी 6 तारीख को ही वो 'आत्मीय युवा महोत्सव' से लौटे और कल फिर गए! वे हमें सिखाते हैं कि आप सब भी आपस में एक-दूसरे से ऐसे ही जुड़ जाओ और ऐसे ही आत्मीय बनो। वहां कुछ डॉक्टर्स की कमी नहीं है, वहां कोई केयर की भी कमी नहीं है; सब बहुत अच्छा सॅटअप है।

इसी प्रकार **हमें भी आपस में एक-दूसरे के बारे कुछ पता चले कि इसकी तबियत ठीक नहीं है या इसे यह परेशानी है, तो प्रभु को राज़ी कर लेने के लिए, हमसे जो भी हो सकता हो, यदि जा न सकते हैं तो फोन पर बात कर लें और उस व्यक्ति के लिए प्रेयर करें।** माना कि एकदम पहुंच नहीं सकते, पर घर पर बैठ कर प्रेयर तो कर सकते हैं? मुझे गुरुजी के इस जॅस्चर से कल से यह विचार आ रहा था। तो, सबसे पहले साहेब की तबियत एकदम अच्छी हो जाए–ऑपरेशन बहुत अच्छी तरह से हो जाए, उसके लिए हम सब आज सभा में धुन करें।

अब बच्चों से कन्सर्न्ड एक इम्पोर्टन्ट बात, जो हम बड़ों को भी खूब जरूरी है। अबकी बार हम अमदावाद गए, तो दिलीपभाई ठक्कर (बापू) के यहां पर 'महापूजा' थी। वहां गुरुजी ने सब यंग बच्चों को अचानक बुलाया। जैसे सीमाबेन का लड़का ध्रुव, संजयभाई का लड़का कलश, तृप्ति-समीर का नंदीश है। **गुरुजी** ने महापूजा में और कोई कथावार्ता नहीं की, पर सब बच्चों से कहा–

कोई भी हेल्मेट पहने बिना मोटरबाईक या स्कूटर न चलाए और हेल्मेट भी आई.एस.आई मार्का ही पहनना।

वहाँ **नक्षु** का एग्ज़ाम्पल भी दिया– *मंदिर में खेलते हुए नक्षु ने सिर्फ 1-2 बार यह बात सुनी होगी कि मैंने ऐसी आज्ञा दी हुई है कि सभी भाई और यहाँ जो बहनें हैं वे भी–गंगा, नित्या वगैरह जो स्कूटर चलाती हैं, हर एक–आगे बैठने वाला तो हेल्मेट पहने ही, लेकिन पीछे वाला भी हेल्मेट पहन कर ही बैठे। मेरी हर एक बात का उसे कितना ध्यान रहता होगा कि एक-दो बार मंदिर से जाते हुए प्रकाशभाई, प्रभाकरभाई जैसों ने नक्षु से कहा– बैठ जा, तुझे घर पर छोड़ देते हैं। तो उसने कह दिया कि मुझे नहीं आना। यूँ दो-तीन बार उसने मना कर दिया। फिर उससे रीज़न पूछा तो बोला–**पीछे बैठने के लिए मेरे पास हेल्मेट नहीं है!***

बात बहुत छोटी है, पर हमें वो सिखा जाती है कि गुरुजी की बात उसने किस ढंग से पकड़ी होगी! बाकी तो 8 साल

का बच्चा है। उन्होंने यह भी कहा था – *मैं तुझे गिरने नहीं दूंगा, तुम मुझे पकड़े रखना।* पर, उसका एक ही जवाब रहा – *मुझे नहीं जाना।* सभी यंगस्टर्स जो सेवा में आते हैं, उन्हें गुरुजी ने यहां तक कहा है कि मंदिर से अक्षरज्योति जाना हो या मंदिर के कॉम्प्लॅक्स में पीछे भी स्कूटर पर जाना हो, तो भी हेल्मेट पहने बिना नहीं जाना। गुरुजी की यह इंस्ट्रक्शन इसलिए है कि मानो कभी कुछ टकरा जाए या गिर जाओ तो सिर पर चोट न लगे। गुरुजी की भावना तो यही होगी।

बापू के घर गुरुजी ने यह जो बात की उससे मुझे विचार आया कि जो सत्पुरुष हमारे स्थूल देह की जब इतनी चिंता करते हैं, तो **हमारी चेतना-जो अनेक जन्मों से जन्म-मरण के चक्कर में भटक रही है-कहीं न कहीं हमारे चैतन्य की प्रगति, हमारी ही किसी वृत्ति-स्वभाव के कारण रुकी हुई है, उसकी उन्हें कैसी फ़िकर रहती होगी?** भले हंसी-मज़ाक में कहें या डांटकर या कभी प्यार से-उनकी हर एक बातचीत में हम ऐसा ख्याल रखें कि इस आज्ञा से मेरा भला होने वाला है! किसी स्वार्थ के लिए-मतलब के लिए हम कितने लालायित हो उठते हैं? पर, अपने जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त होने के लिए हम अभी तक ऐसे लालायित तो क्या जाग्रत भी नहीं हुए हैं?

तो, सबसे पहले तो यही बात कि गुरुजी का हर जॅस्चर हम इस दृष्टि से निहारें कि वे जो भी कर रहे हैं, वो जरूर मेरे परम हित में और चेतना के विकास के लिए ही है। सरफेस लेवल से ये बातें समझ नहीं आएँगी, लेकिन, खूब गहराई से और साक्षात् प्रभु स्वरूप काकाजी उन्हें हमारे लिए ही धरती पर लाए हैं व हमारे चैतन्य की प्रगति के लिए उनका हर एक जॅस्चर है – इस नज़रिए से उन्हें देखें। वे हमारे साथ हमारे लेवल पर आ जाते हैं। मैं हर बार बात करती हूँ कि गुरुजी आज इतने सस्ते बने हैं कि हम जब भी आते हैं, तो वे हमेशा हमारे लिए इज़िली एक्सेसिबल हैं। हम कहें कि कोई बात करनी है, तो कहेंगे – अच्छा, चार बजे आ जाना। दोपहर को वे जब आराम में जाते होंगे, तब भी उनके माईन्ड में यह तो होता ही होगा कि मैंने चार बजे फलां व्यक्ति को बात करने के लिए बुलाया है। मुझे नहीं लगता कि वे बहुत आराम से सो भी जाते होंगे। हो सकता है कि वे सो नहीं रहे होंगे और जो व्यक्ति बात करने आने वाला होता है, उसके लिए वे भजन कर रहे होंगे।

हम सबके लिए गुरुजी इतने सस्ते बने हैं कि वे हमें महसूस ही नहीं होने देते कि वे हम से खूब बड़े हैं। दोपहर को मैं ठाकुरजी का दर्शन करने आई थी, तब दिलीपभाई के साथ बात हो रही थी कि हम उनके घर महापूजा के लिए गए थे, तो वहां स्पेस बहुत कम था और हम करीब 80 जने थे। एक थ्री सीटर सोफा था, जिस पर मुश्किल से 3 जने बैठ सकें। तो, गुरुजी वहां सिकुड़ कर बैठे और साथ में दिलीपभाई के समधी और धनसुखभाई को बिठाया। यह देखकर मुझे एकदम एहसास हुआ कि **गुरुजी हमारी कक्षा पर आकर हमारे साथ कैसे सहज बरतते हैं!! सो इस साधु की क्या ऊंचाई है वह ख्याल नहीं पड़ता।** वर्ना बापू तो सबके बैठने की कहीं न कहीं व्यवस्था कर ही देते। लेकिन, गुरुजी बोले – *यहां जगह है, बैठो।* यूँ बहुत नॉर्मल व्यक्ति की तरह छोटी जगह में खुद बैठे!

इसी शनिवार को ओ.पी. अग्रवालजी के बेटे दीपक ने सभा में बात की थी। दो साल के लिए उसकी यहां-दिल्ली ट्रांस्फर हुई थी; अब मुंबई वापिस जा रहा है। तो, बात करते हुए एकदम फफक-फफक कर रो पड़ा। रो इसलिए पड़ा कि **दूसरी जगह पर तो ऐसे गुरु के दर्शन तक नहीं होते। जैसे कि सविताजी ने बात की कि कई लोग तो स्क्रीन पर ही अपने गुरु को देख सकते हैं। कइओं ने तो मुझे बताया है कि हम गुरु पूजन भी स्क्रीन पर ही करते हैं।** हम सब जानते हैं गुरुजी नीचे 'चिदाकाश' हॉल में ही फोल्डिंग बेड बिछवा कर सोते हैं और उनके आस-पास सब सो जाते हैं। यह बात करते हुए दीपक रो पड़ा कि हमें गुरुजी के साथ सोने को भी मिलता है, गुरुजी के बेड के बाजू में हम सोते हैं। बहनें तो अक्षरज्योति चली जाती हैं, पर रात को 12-12 बजे तक गुरुजी सब मुक्तों के साथ आनंद करने के लिए बैठे रहते हैं।

मुझे कई बार ऐसा लगता है कि वे हमसे अपना संतस्वरूप छुपाने की ही कोशिश करते हैं। **सच्चे गुणातीत संत कुछ मुक्तों के लिए ही धरती पर आते हैं; सो अपने आप को इतर नज़रों से ज़्यादा से ज़्यादा छुपाए रखने की कोशिश करते हैं।** मैंने काकाजी का जीवन भी देखा है। गुरुजी के मुंह से गुणातीतानंदस्वामी का प्रसंग कई बार सुना है कि एक बार संतगण कहीं जा रहे थे। उन सबने नए जूते पहने हुए थे, जिससे उन संतों को 'शू बाइट' हो गया। संत जूते उतारकर हाथ में लेकर चलने लगे, तो गुणातीतानंदस्वामी उन 40 संतों के जूतों की गठरी बांध कर अपने सिर पर उठा कर चले। आज सेवक हमें एक नैपकीन भी नहीं उठाने देते कि नहीं-नहीं दीदी आप मत पकड़ो। लेकिन उन संतों ने स्वामी को पहचाना ही नहीं होगा कि ये स्वामी **'अक्षरब्रह्म का साकार स्वरूप'** हैं, तभी तो उन्हें अपने जूते दिए होंगे न! हम अपने जूते उठाने के लिए तो किसी को तभी दे सकते हैं न, जब हम उसे बहुत नॉर्मल या लो समझें। यूँ स्वामी तो मस्ती से चले। पर, उनके स्वधाम जाने के बाद इन संतों को जरूर ख्याल आया होगा कि अरे! ये तो महाराज के रहने का साक्षात् धाम 'अक्षरब्रह्म' हमारे साथ जीवन जी गया और हम उन्हें पहचान नहीं सके!!

तो, **भले ही गुरुजी हमारे साथ रहते हुए कितना भी सहज बरतें**–मैं नहीं कहती कि आनंद नहीं करना है, आनंद करना है-अपने दिल की बात भी उनसे शेयर करनी है, उनसे सब कुछ पूछना है, **लेकिन साथ-साथ काकाजी ने उन्हें हमें जो कुछ देने के लिए भेजा है, वो उनसे लेना हम भूल-भुलैया में कहीं चूक न जाएं।** कई बार हमारी तरह वे भावुक होकर रो भी पड़ते हैं। पर, इस भूल-भुलैया में, **हमें हुई इतनी बड़ी प्राप्ति को, कहीं इज़ी गोइंग वे में ना लें।**

गुरुजी की रीति पता है कि उन्हें बहुत भीड़, बहुत ज़्यादा ऐसे लोग इकट्ठे हों, जिनका आपस में एक-दूसरे से कोई परिचय भी न हो–ऐसा उन्हें कभी पसंद नहीं आया। सो, **हम जितने भी गुरुजी के कॉन्टेक्ट में आए हुए हैं, काकाजी के कॉन्टेक्ट में आए हुए हैं, स्वरूपों के संबंध में आए हुए, वो सब एक सरीखी समझ से रहें।** झाड़ू का एक तिनका होगा, तो उसे कोई भी आसानी से तोड़ सकेगा। लेकिन, झाड़ू की पक्की गठबंध होगी तो उसे कोई नहीं तोड़ सकता। यूँ, हम **सबकी ऐसी एकता हमें विजय देगी।** गुरुजी को देखने

का हमारा नज़रिया अब इतना डेवलप अवश्य हो जाना चाहिए कि हम जान सकें कि ये कोई आम व्यक्ति नहीं बोल रहा है, भगवान का **सच्चा साधु** बोल रहा है और उनके मुंह से जो भी निकले – उन बातों को हम झेल लें। कोई भी चीज़ उनके ख्याल से बाहर नहीं होती, फिर भी अगर वे कुछ कहते हैं, तो उनका वचन नीचे नहीं गिरने देना चाहिए। उनका वचन हम झेल ही लें, यह करना ही है और लग पड़ना है। सबसे पहले तो यह एक बात करनी थी।

जो मिले हैं उनका आप सबको भी अनुभव है और मुझे भी सालों का अनुभव है। 30 साल से एक हरिभक्त-रमेशभाई अपने सत्संग के सब सेंटर्स में जाते हैं। लास्ट मन्थ या 2 महीने पहले वे एटलांटा से दो दिन के लिए यहाँ दिल्ली आए थे। वे शोभनाभाभी से बोले कि मैं सब जगह गया हूँ। 30 साल से सत्संग में हैं, सो सब जगह गए होंगे। उन्होंने कहा –

'मैं अपने सब सेंटर्स में घूमा हुआ हूँ। पर जब स्वभाव छोड़ने का-अंदर की सफाई का प्रोसेस शुरू होता है, तो सब पीछे हट जाते हैं। जबकि यहां की बात कुछ अलग लगी है। यहां पर मुझे अंदर सुख-सुख-सुख महसूस हो रहा है। गुरुजी की आंखें ही ऐसी हैं, जो हमारे अंतर को भेद देती हैं।'

वे यह भी बोले – ***'गुरुजी खूब क्लियरकट हैं, उनके वर्तन में और बातों में जैसे काकाजी ही उठ-बैठ रहे हों – ऐसा मुझे दर्शन हो रहा है।'***

कइयों ने तो काकाजी को देखा भी नहीं हैं। काकाजी-पप्पाजी के दर्शन भी नहीं किए हैं। लेकिन, तब भी आज **गुरुजी ने हम सबके दिलों में काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, साहेब, अक्षरविहारीस्वामिजी और दिनकरभाई को कैसा बिठा दिया है!** हर एक के मन में उनके प्रति अपनापन व पूज्यभाव अपने आप हो जाता है।

यहां आकर सब कहते हैं – 'यहां बहुत शांति है।' तब गुरुजी तुरंत कहते हैं कि काकाजी लास्ट में आए थे-थोड़ी ही देर बैठे और ऐसा कुछ करिश्मा कर गए कि इस जगह पर सबको शांति महसूस होती है। दरअसल **गुरुजी का इस भूमि पर जो तप है, उनका जो भजन है, उसके कारण आने वाले हर एक को शांति महसूस होती है। काकाजी के वचन से गुरुजी यहां धूनी जमा कर जो बैठे हैं, उसके कारण यहां आने वाले हर एक को शांति मिलती है।** गुरुजी अपना नाम तो कभी नहीं देंगे। वे तुरंत कहते हैं कि काकाजी ने किया। वे जो यह बात कहते हैं वो गलत नहीं है, लेकिन हमारे लिए समझने की बात है कि यह जो शांति है, **वो प्रगट सत्पुरुष यहां काकाजी को धार कर बैठें हैं इसी वज़ह से है।**

साथ-साथ **हम भीतर में इस सच्चाई को भी समझें कि हम किसके कारण आज सुखी हैं। किसके भजन के कारण हम यहां पर बैठ भी सकते हैं।** फिर भी, हमारी निगाह टोटल गुरुजी की तरफ नहीं है। आज मैं भी गारंटी से नहीं कह सकती कि मेरी निगाह सतत गुरुजी की तरफ ही रही है। आप सब महिमा से बातें करते हैं, आप गलत नहीं हैं, लेकिन तब भी मुझे लगता है कि इतना अनुभव होने के बाद भी मेरी निगाह 100 परसेंट गुरुजी की तरफ नहीं है।

मैं जो स्वभाव की बात कर रही थी – बहुत दिनों से मेरे मन में यह बात आती रहती थी कि (पूर्वाश्रम में) घर पर मेरा बहुत दयालु स्वभाव था। 'प्रगट' के सत्संग की बात तो कुछ पता नहीं थी और अपने आप में मैं इसे एसेट मानती थी कि मेरा स्वभाव बहुत अच्छा है। किसी को हार्म (नुकसान) पहुंचाने वाला तो है नहीं। इतनी हद्द तक का दयालु कि घर पर मैं धीरे से स्टोव जला कर, उस पर परांठे बनाती और उसके साथ अचार रख कर उन लड़कियों के लिए स्कूल ले जाती, जिनकी मधर्स ने उन्हें खाना न दिया हो... सालों पहले की बात है; मेरे फाधर हम सब बच्चों के लिए मैंगोशेक बनाते और सबको एक-एक ग्लास में डाल कर देते। मैं सबकी नज़रों से छुपा कर सामने रहती लड़की 'मुन्ना' के लिए अपने हिस्से का मैंगो शेक ले जाती कि इनके घर पर तो मैंगो शेक बनता नहीं है। मैं तो अपने इस नेचर को बहुत अच्छा ही मानती थी। कोई बीमार हो, तो उसके यहां झाड़ू-पोछा कर आती कि उसे तकलीफ न पड़े, कपड़े धो आती, बर्तन मांज आती। यहां आई तब छोटी ही एज थी और काकाजी-गुरुजी, सब स्वरूपों की बातें सुनीं, तो पता चला कि यह तो मेरे अंदर का 'सत्त्वगुण' है। गुरुजी ने भरतजी की बात बताई थी कि राजपाट-सब कुछ छोड़ कर भरतजी तपस्या करने के लिए जंगल में चले गए थे। वहां हिरन का एक घायल बच्चा आया, वो कूं-कूं-कूं कर रहा था। भरतजी ने देखा कि खून बह रहा है। तो, उसी समय कोई जड़ी-बूटी लगा दी। भरतजी ने उसकी देखभाल की और हिरन का बच्चा ठीक हो गया। भगवान पाने के लिए राजपाट छोड़ा था, बीवी-बच्चा छोड़ा था, पर हिरन के इस बच्चे को नहीं छोड़ पाए। जब भी भरतजी ध्यान करने के लिए बैठते, तो हिरन के बच्चे की कूं-कूं-कूं सुनाई देती। इतिहास बताता है कि वो ध्यान ही न कर पाते और हिरन के बच्चे में मन चला जाता और... राजपाट-सब कुछ छोड़ने के बावजूद भी भरतजी को आख़िर हिरन का जन्म लेना पड़ा! मृग की योनि मिली क्योंकि – अंतिम समय में भरतजी का ध्यान मृग में ही था। सारी तपस्या व्यर्थ ही गई न! गुरुजी बताते हैं – ***भरतजी को यदि कोई पहुँचे हुए सच्चे संत मिल जाते, तो वे समझाते कि बच्चा अब ठीक हो गया, इसे छोड़ दे और जिसलिए सब कुछ छोड़ा, उस ओर अग्रसर हो जा!*** सुन कर मुझे यह ख्याल आया कि अरे! जिसे मैं अपना अच्छा नेचर मानती हूँ, वो तो मेरा सत्त्वगुण है। दयालु स्वभाव-दया सबके लिए रखनी है-सबकी कॅयर भी करनी है, लेकिन गुरुजी को बीच में रखकर-गुरुजी सेंटर में हों तभी रखनी, यह बात तब समझ आई।

तो, मैं यह बताना चाहती हूँ कि हमें अपने स्वभावों का ख्याल ही नहीं है। **जिसे हम अच्छा मानते हैं, अपनी एसेट मानते हैं, वो ही दरअसल हमारे लिए लायबिलिटी बनती है।**

काकाजी व गुरुजी के एटैचमेंट से मैं यहां पर आई थी। मेरे आने से पहले गुरुजी का बर्थडे नहीं मनाते थे। 78 में मैं आई तब तक कुछ भक्त ऐसे ही इकट्ठे बैठ जाते होंगे और ऐसे ही कुछ सेलीब्रेट कर लेते होंगे। तो, मैंने गुरुजी को कहलवाया – *हमें तो आपका जन्मदिन मनाना है।* उस समय मेरे साथ रेणू दीदी और दो-तीन लड़कियाँ और थीं। तो गुरुजी ने कहलवाया – *मनाओ।* सबने पूछा – *हम अपने आप कैसे मनाएँ?* तो गुरुजी ने कहलवाया – *गुड्डी को बोलो, जन्मदिन मनाना है, तो अपने आप मनाओ।* मैंने कहलवाया – *ठीक है, हम लोग*

मनाएँगे। पर, जन्मदिन मनाने के लिए खाना वगैरह बनाएँ या कुछ डॅकोरेशन करें तो उसके लिए पैसे तो चाहिए? गुरुजी ने मंदिर में कह दिया था – *मंदिर से जो भी गैस, माचिस, सिलेंडर यूज़ होगा, इनके पैसे भी उससे लेना और उसे ही सारा हिसाब देना।* सबके पास यूँ पैसे मांगना, वो तो मेरे लिए नानी मरने जैसी बात थी। लेकिन अंदर से खूब भजन करके एक-एक से पर्सनली पैसे मांगे–गुरुजी का जन्मदिन मनाना है; आपको जितना कॉन्ट्रिब्युशन करना हो वो मुझे दे जाना। **आज तक 13 मार्च की मेरी वो सेवा ज़ारी है।** अभी 13 मार्च मनानी है, तो यहां पुरी अंकल के पास 13 मार्च से कनसर्न्ड कोई खर्चा आएगा, तो गुरुजी कहेंगे कि आनंदी से पूछ लो, उसके पास हिसाब है।

इसी तरह, किसी को कुछ डाँट कर-ज़ोर से कहना हो, वो तो मेरे बस की बात नहीं थी। कोई बोला कि दीदी खूब सॉफ्ट हैं। पर, यदि मुझे गुरुजी की मरज़ी लगे या उनसे सिग्नल मिल जाए कि आनंदी तुझे यह करना है, तो मैं किसी की मुहब्बत नहीं रखती; किसी की भी नहीं। फिर तो शायद भूखी शेरनी से भी ज़्यादा हो जाती हूँ।

अभी ओ.पी. अग्रवालजी राजकोट गए थे, वहाँ का एक प्रसंग बता रहे थे जो मुझे पता भी है। राजकोट में महाराज के समय का बेरी का एक पेड़ है। महाराज स्वयं उस पेड़ के नीचे बैठे थे। उनके साथ सद्‌गुरु गोपालानंदस्वामी थे। महाराज जैसे ही उठने लगे, तो बेरी का एक कांटा महाराज की पाग में फंस गया। गोपालानंदस्वामी पाग से वो निकालते हुए बोले – *अरे बेरी! ये साक्षात् पुरुषोत्तम नारायण तेरे नीचे-तेरी छांव में-आकर बैठे, तब भी तूने अपना स्वभाव नहीं छोड़ा।* गोपालानंदस्वामी के ऐसा कहते ही बेरी के सारे कांटे तुरंत झड़ गए और आज भी उस बेरी के पेड़ पर बेर आते हैं, पर कांटा एक भी नहीं है। यह घटना हक़ीक़त में बनी हुई है। अभी भी वहां शीशे के बाउल में संभाल कर वो कांटे रखे हुए हैं। आज हम सब अंदर से दुःखी हैं, तो सिर्फ अपने स्वभाव के कारण। अगर शांति से **अपने भीतर झाँकेंगे तो ख्याल आएगा कि हमें हमारा स्वभाव दुःखी करता है। बाकी, काकाजी-गुरुजी ने हमें यहां हर प्रकार की सुविधा करके दी है। अब जो दुःख है, वो सिर्फ स्वभाव का है–जिससे खुद दुःखी होते हैं, पर उसे छोड़ने को भी तैयार नहीं हैं...**

हम स्वभाव कैसे पकड़ कर बैठे हैं? गुणातीतानंदस्वामी के समय का एक प्रसंग गुरुजी अकसर दोहराते हैं। जूनागढ़ मंदिर के सभा मंडप में नई दरी बिछाई होगी। बरसात का मौसम था। कोई भगत आया; कीचड़ से सने उसके पाँव दूर से देख कर गुणातीतानंदस्वामी ने कहलवाया– *उन्हें बोलो बाहर पानी से पांव धोकर फिर आएँ।* दरी खराब न हो इस हेतु बहुत सामान्य यह सूचन था। लेकिन हमारे अंदर कितना इगो होता है, कितना मान भरा हुआ होता है कि वो भगत बाहर से ही वापिस चला गया! वैसे वो रेग्युलर आने वाला भगत था। चार-पांच दिन वो नहीं आया, तो जैसे हमारे लिए गुरुजी फोन कराते हैं कि– *भई, क्यों दिखाई नहीं पड़ते?* ऐसे ही गुणातीतानंदस्वामी ने देखा कि कुछ दिन से वो दिखाई नहीं पड़ रहा है। सो, स्वामी ने किसी भक्त को पता लगाने

के लिए भेजा कि पता तो करो कि वे क्यों नहीं दिखाई देते। जब वह भक्त पता करने के लिए गया तो उन्होंने उत्तर दिया– *स्वामी से कहना, अब जब पांव धो लेंगे तभी आएँगे।* देखो, कितनी छोटी-सी बात थी? हमारे भीतर भी इस तरह की कई चीजें पड़ी हुई हैं। इतने सालों से सत्संग करने के बाद भी, सालों से हम गुरुजी के ये प्रवचन सुनते हैं, तब भी हमारे अंदर से भी वो चीजें अलग-अलग रूप में बाहर आ जाती हैं। उस भगत ने कहलवाया स्वामी से कहना कि अब पांव धोकर ही आऊंगा; पर, उसमें नुकसान किसका है? स्वामी का नुकसान तो है नहीं। हमारा अपना नुकसान है। **संत हमें शॉर्ट कट्स बताते हैं, लेकिन हम उस रास्ते पर चल नहीं पाते।**

छोटी-छोटी चीजों के कारण हम साधु के साथ अपना संबंध डेवलप नहीं कर पाते, जबकि देखें तो हमारे स्वरूप हमारे सामने ऐसा जीवन जी गए हैं। योगीजी महाराज के समय में गोंडल के सीदीभाई कुछ बीमार हो गए थे। तो, बापा ने उनसे कहा– *'बॉम्बे में अच्छे डॉक्टर्स हैं, आप वहां इलाज कराओ। मैं दादुभाई से कह देता हूँ।'* तब तो सारे समाज के लिए ऐसे काकाजी ही थे। वहां नीचे ताड़देव में सोनाबा 8-सी में रहती थीं। सोनाबा अपना घर खाली करके ऊपर 6/डी में रहने के लिए चली गईं ताकि उन्हें डिस्टर्बन्स न हो। दूसरी ओर–योगीजी महाराज से सीदीभाई ने काकाजी को यह भी कहलवाया कि हॉस्पीटल जाने-करने के लिए उनके लिए एक गाड़ी रख देना। लंबे अरसे तक वे ताड़देव में रहे। इस दौरान एक दिन कुछ बहुत जरूरी काम से काकाजी ने वो गाड़ी ऑफिस भेजी। इधर प.भ. सीदीभाई को थोड़ी राह देखनी पड़ी, तो एकदम गुस्सा हो गए और बापा से शिकायत कर दी कि हमारी सेवा में रखी गई गाड़ी दादुभाई इस्तेमाल करते हैं, वह हमारे काम तो आती नहीं। योगीजी महाराज ने उनकी बात सुनकर काकाजी को कहलवाया कि उन्हें पूछे बिना आपने गाड़ी ऑफिस के काम के लिए कैसे भेजी? काकाजी ने दीनभाव से क्षमा मांगते हुए कहा– *बापा! अब ऐसी कोई भूल नहीं हो उसका ख्याल रखेंगे।* तुरंत ही काकाजी ने सीदीभाई से, उन्हें हुई परेशानी के लिए, माफ़ी भी मांगी। हम इस परंपरा में बैठे हैं। हमारे जीवन में भी ऐसी चीजें अलग-अलग ढंग से जरूर बनती होंगी। पर, क्या हम ऐसा कर सकेंगे कि हमने अपनी गाड़ी सेवा के लिए दी हुई हो और फिर भी माफ़ी माँगे?

यहां मैं इतने सालों से गुरुजी की सेरेछाया में रह रही हूँ। एक फेमिली को तो गुरुजी ने कहलवाया था कि आप मंदिर के गेट तक आ जाओ, मैं खुद हार लेकर खड़ा रहूंगा। मैंने खुद देखा हुआ था कि उस फेमिली ने इनका खूब अपमान किया था-बदनाम करने पर तुले थे, तब भी उस फेमिली को कहलवाया कि आप गेट पर आओ, मैं आपको रीसीव करूँगा। **वे ऐसा कहलवा पाए क्योंकि काकाजी का वारसा उन्होंने रखा हुआ है।** गुरुजी तो उनके घर पर भी चले जाते–मैं प्रसंग की साक्षी हूँ, इसलिए कह रही हूँ। लेकिन सभी ने गुरुजी से कहा कि इस समय वे इतने लो लेवल पर उतर चुके हैं कि कुछ साजिश करके तुम्हें फंसा देंगे, इसलिए आप वहां मत जाओ। तब भी गुरुजी ने उस फेमिली को कहलवाया था कि किसी भी कॉस्ट पर काकाजी का संबंध छोड़ने जैसा नहीं है। आप गेट तक आ जाओ, आपका हाथ पकड़ कर मैं इज्जत से अंदर ले आऊंगा। यूँ हम ऐसे

ख़ानदान से हैं–गुणातीत ख़ानदान के हैं। कई चीजें हमसे बनती होंगी, नहीं बनती होंगी। हम गुरुजी से एटॅच्मेंट के कारण इस रास्ते पर चलने लग पड़े हैं, लेकिन हम उस मंजिल तक पूरा पहुंच ही गए हैं–ऐसा नहीं है। हमसे भी कई गल्तियां होती होंगी और ऐसे प्रसंग आप लोगों के साथ भी बनते ही होंगे, लेकिन वहां हम यह याद रखें कि हम तो गुणातीत ख़ानदान के हैं। हमें भले विचार आ जाए, पर हमें अड़ियल रवैया नहीं रखना है।

31 दिसंबर की मध्यरात्रि महापूजा के बाद गुरुजी ने बापू और हरखचंदभाई का कितना अच्छा प्रसंग बताया। बापू काकाजी के रूम में थे। हरखचंदभाई चाय लेकर कमरे में आ रहे थे कि बापू ने दरवाज़ा खोला और चाय नीचे गिर गई। एक तो सुबह की चाय के लिए काकाजी को लेट हो ही गया था, उससे हरखचंदभाई का दिमाग़ अपसेट था। काकाजी ने कहा कोई बात नहीं दोबारा बना लाओ। लेकिन हरखचंदभाई के माइन्ड में यही रहा कि बापू बहुत जल्दीबाजी करते हैं, उतावले हैं। इतनी भी क्या जल्दबाजी थी? आराम से दरवाज़ा नहीं खोला जा सकता? यूँ हरखचंदभाई के माइन्ड में वो बात चलती रही और काकाजी कहते रहे कि **'महाराज ने किया, महाराज ने किया'**। दूसरी ओर हरखचंदभाई कहते रहे 'बापू ने किया'। शाम तक यह चलता रहा। हम भी जानते हैं कि बापू की थोड़ी स्पीड भी है, बापू हमेशा जल्दबाजी में ही होते हैं। आख़िर जब हरखचंदभाई ने कहा कि हाँ, काकाजी आप ठीक कह रहे हो-**'महाराज ने किया'**, तब काकाजी ने वो बात करनी बंद की!

तो, आज जो हम इकट्ठे हुए हैं वे हम सब–पूरे साल भले और कुछ न हो सके, लेकिन किसी से कुछ भी हो जाए, हम यही सोचें कि **'महाराज ने किया है'**। स्वभाव तो सिर्फ अपने यहां पर ही निकलेंगे और कोई जगह नहीं है। स्वभाव निकालने के लिए ऐसे प्रसंग तब तक बनते भी रहेंगे, जब तक हम दिल से ये नहीं मान लेते कि कर्ता-हर्ता तो महाराज हैं। तो, आज के दिन हम सिर्फ यही सॅन्टेन्स लेकर जाएँ-जब किसी से कोई गलती हो जाए-भूल हो जाए या वो हमारे ढंग से न चले तो **'महाराज ने किया'**। और ज़्यादा बातें हमें याद रहें या न याद रहें, लेकिन इतना तो याद रख सकते हैं न कि **'महाराज ने किया'**। हम एकदम व्यक्ति को देखते हैं कि इस व्यक्ति ने किया। इस व्यक्ति ने मुझे ऐसा बोला था सालों पहले–तीन साल पहले मुझे ऐसा बोला था। पर, अब उस व्यक्ति ने प्रगति भी कर ली हो, ऐसा समझ कर हम जो यहां आते हैं, वे अपने आप में अंतर्दृष्टि क्यों न करें कि मैं भी तो अब तक यह भूल नहीं पाया! अपने जीवन से सामने वाले को ऐसा लगना चाहिए कि इनको क्या मिला है! ये किसकी संगत में हैं। जैसे कोई शराब पीना छोड़ दे, तो पूछते हैं न कि आजकल तुम्हें कोई अच्छी संगत मिल गई लगती है जो तुमने शराब पीनी छोड़ दी। ऐसे ही हमें देखकर सभी को लगना चाहिए। छोटी-छोटी बातों पर हम बुरा न मानें, छोटी-छोटी बातों पर हम रूठ न जाएँ। कश्यपी ने बहुत अच्छी बात की कि हम संत को अधिकार दें कि वो हमें हक़ से कह सकें कि तुम्हारी गाड़ी यहां अटकी है, इससे तुम आगे जाओ। इस प्लेटफॉर्म पर रुके हुए हो, इससे आगे जाओ। बाकी खाना-पीना आनंद करना, वो तो किसी क्लब में या होटल में जाकर भी कर सकते हैं लेकिन, पर्टीक्युलर्ली हम जो यहां आते हैं, वे गुरुजी से ऐसी चीजें हासिल कर लें कि उन्हें संतोष हो कि मेरे बच्चों ने मुझसे कुछ पाया। वो हमारी सबसे बड़ी सेवा है...

अभी-अभी शिकागो से सपन और रचना के साथ मार्क और जोश आए थे। वे अमेरिकन थे, उन्होंने तो दिनकरभाई को देखा भी नहीं है। पर, **गुरुजी** ने उनसे कह दिया –

अपनी स्पीडी और इज़ी स्पीरीच्युअल व वर्ल्डली डेवलपमेंट एण्ड एडवांसमेंट के लिए आप सिर्फ दिनकरभाई से जुड़ जाना। उन्होंने दिनकरभाई को देखा नहीं है, लेकिन गुरुजी ने यह बात कही कि मैं आपको गारंटी देता हूँ कि **'यू विल फाइंड यॉर जीसस लाइव इन हिम'।** यूँ गारंटी से बात को कहना यह रिफ्लॅक्ट करता है कि गुरुजी उनके साथ दरअसल हमें दिनकरभाई की महिमा समझा रहे हैं। आज किसी क्रिश्चन से कोई यदि कह दे कि तुम्हें लाइव जीसस मिलेंगे, तो वो अहोभाव से कितना ख़ुश हो जाएगा!

...गुरुजी कई दिनों से एक बात कर रहे हैं, जिसकी गहराई हम समझ नहीं पा रहे हैं। वो यह कि हम कहीं बहुत ज़्यादा भीड़-गेधरिंग या **वैभव की झाक-झमक या किसी की तपस्या, नियम-धर्म, व्रत वगैरह गुण एवं रिद्धि-सिद्धि व ऐश्वर्य-प्रताप की चमक-दमक देख कर तुरंत प्रभावित हो जाते हैं।** **गुणातीतानंदस्वामी** की कही एक बात है– ***सोने के मंदिर बनेंगे... इससे दस हज़ार गुणा सत्संग भी बढ़ जाएगा, लेकिन 'ये साधु' नहीं मिलेंगे।***

तो, **काकाजी** से **गुरुजी** ने पूछा था– ***काकाजी अपने यहां पर तो ऐसा कहा हुआ है कि 'ये साधु' धरती पर अखंड रहेंगे और स्वामी की बात में ऐसा विरोधाभास क्यों कि 'ये साधु फिर नहीं मिलेंगे।'***

काकाजी ने बताया था– ***'नहीं मिलेंगे' का मतलब हम वैभवशाली सत्संग देखकर, बहुत झाक-झमक, चमक-दमक देखकर उससे इतने चकाचौंध हो जाएँगे कि फिर हमें वहां 'गुणातीत साधु' को ढूँढना पड़ेगा और ढूँढने पर भी वो नहीं मिलेगा!***

पर, हमें वे मिले हैं और उनका अनुभव भी हुआ है। उन्हें पहचाने हुए, उनकी मरज़ी को समझे हुए गुरुजी की गोद में उन्होंने ही हमें रखा है; सो, हमें ऐसे किसी रूट पर नहीं जाना है।

...गुरुजी के रोम-रोम में काकाजी हैं। उनकी मरज़ी के सिवा वे कुछ नहीं करते। कहीं पर स्ट्राँग होना हो तो हो जाते हैं, क्योंकि उन्हें काकाजी के सिद्धांतों का पता है। हमें जरूर लगेगा कि गुरुजी अड़ गए, लेकिन हम भूल जाते हैं कि उन्होंने काकाजी को खूब करीब से देखा है और अपने मन में उठे प्रश्नों को बिना हिचक के **प.पू. काकाजी से पूछ-पूछ कर प्रगट के ज्ञान के कई रहस्यों को वे कुछ तो समझे हुए हैं...** पर, हम साधु की बात की गहराई को समझ ही नहीं पाते। जैसे– एक भजन की पंक्ति आपको याद होगी– *'नैनन में रहो घनश्याम पिया...'* हम तो इसका सीधा अर्थ ऐसा ही समझते थे कि महाराज की मूर्ति हमारी आँखों में – आँखों के सामने रहे। पर, **गुरुजी** ने समझाया कि इसका अर्थ यह है कि ***हे मेरे प्रभु, हे काकाजी! मेरे नैनों में-आप ऐसे बस जाओ कि मैं सब में आपको ही देखूं। मुक्तों में वे दिखाई ही देंगे, फिर मानने की कोशिश कहाँ रही?*** यह प्रार्थना मुझे भी करनी है, आप सब भी मेरे लिए भजन करना...

– प.पू. आनंदी दीदी

(ध्वनिमुद्रण से संकलित)

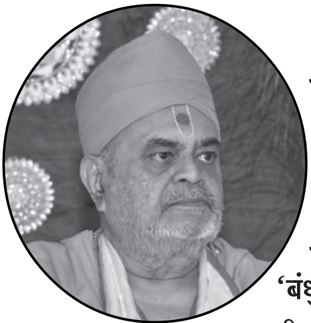

बंधुजोड़ी शताब्दी के तृतीय चरण के साथ ही प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी का 80वाँ प्राकट्य पर्व...

15 फरवरी 2015 – एकादशी का मंगलकारी दिन और भी महत्त्वपूर्ण बन गया, जब सांकरदा - संतमंडल ने **प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** का **80वाँ प्राकट्य पर्व**, ब्रह्मस्वरूप काकाजी - पप्पाजी **'बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव'** के तृतीय चरण के रूप में मनाया !

सुबह करीब साढ़े नौ बजे सांकरदा मंदिर के परिसर से प.पू. दिनकरभाई एवं प.पू. भरतभाई को साथ लेकर, फूलों से सुसज्जित कार में विराजित प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी सभास्थल की ओर रवाना हुए। उनके पीछे-पीछे **पालकी** में धर्मकुल सहित **ब्रह्मस्वरूप काकाजी एवं प.पू. पप्पाजी** की मूर्ति उठाए प.पू. कोठारीस्वामिजी व प.पू. शास्त्रीस्वामिजी के साथ अन्य संतों - मुक्तों ने सभास्थल की ओर प्रस्थान किया।

सभास्थल में पालकी स्थापित करने के बाद सभी स्वरूपों ने आसन ग्रहण किया। सभा का आरंभ **पू. बिम्पलभाई** द्वारा प्रस्तुत भजन *'करीए सहुमां एकता'* से हुआ। तत्पश्चात् सभा का संचालन करते पू. निष्कामस्वामिजी ने प.पू. वशीभाई को माहात्म्य दर्शन कराने के लिए आमंत्रित किया।

प.पू. वशीभाई * ने माहात्म्य दर्शन में एक अत्यंत मार्मिक बात कही –

*अमेरिका के प्रमुख **श्री ओबामा** ने बोला था –*

वी कॅन नॉट फर्गेट अवर अब्राहम लिंकन, बीकॉज़ ही वॉज़ 'धी लिबरेटर' ऑफ धिस कन्ट्री।

एक बार काकाजी और मैं बैठे थे; तब काकाजी ने मर्म में मुझसे पूछा – हूम डू यू कन्सीडर 'धी लिबरेटर ऑफ अमेरिका' ?

तब, मैंने कहा था – लिंकन!

इस पर काकाजी खूब खुश हुए और आशीर्वाद दिया...

*हमारे यहाँ प्रतिमाबहन आती हैं; एक बार उन्होंने बताया कि **काकाजी** ने कहा था –*

'मेरा नाम लेने के लिए भी तुम्हें मेरी कृपा चाहिए होगी।'

मैं सोच रहा था कि हम काकाजी का नाम तो लेते हैं, उसमें कृपा क्यों चाहिए ?

*पर, अब **जब ऐसा समाज हुआ, ऐसा माहौल हुआ तो समझ में आया कि वाकई यह एक रहस्य है...***

ગુજરાતી :

*અમેરિકાના પ્રમુખ **શ્રી ઓબામાએ** કહ્યું'તું –*

વી કૅન નૉટ ફર્ગેટ અવર અબ્રાહમ લિંકન, બીકૉઝ હી વૉઝ 'ધી લિબરેટર' ઑફ ધિસ કન્ટ્રી.

એકવાર કાકાજી સાથે હું બેઠો હતો; ત્યારે કાકાશ્રીએ મને મર્મમાં પૂછ્યું – હુમ ડુ યુ કન્સીડર 'ધી લિબરેટર ઑફ અમેરિકા' ?

ત્યારે મેં કહેલું – લિંકન!

આ સાંભળી કાકાશ્રી ખૂબ રાજી થયા અને આશીર્વાદ આપ્યા...

*અમારે ત્યાં પ્રતીમાબેન આવે છે, એમણે એકવાર જણાવેલું કે **કાકાશ્રીએ** કહ્યું'તું –*

'મારું નામ લેવા માટે પણ તમને મારી કૃપા જોઈશે.'

હું વિચારતો કે અમે કાકાશ્રીનું નામ તો લઈએ છીએ, એમાં કૃપાનું શું કામ ?

*પણ, હવે **જ્યારે આવો સમાજ થયો, આવું વાતાવરણ ઊભું થયું છે, ત્યારે સમજાયું કે ખરેખર આ એક રહસ્ય છે...***

– પ.પૂ. વશીભાઈ

प.पू. वशीभाई ने प्रार्थना करते हुए वक्तव्य पूरा किया ही था कि **प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामिजी** का आगमन हुआ और... तालियाँ बजीं। उनके विराजमान होने के बाद स्वरूपों का हार से स्वागत किया गया। प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने मंच पर विराजमान स्वरुपों को स्वयं **विशिष्ट खेस** अर्पित किए, जिन पर ब्रह्मस्वरूप काकाजी-पप्पाजी की मूर्ति के साथ **बंधुबेलड़ी शताब्दी 2017** अंकित था। खेस अर्पण के बाद **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** ने आशीर्वाद देते हुए कहा–

...संप, सुहृद्भाव, एकता का संदेश – बापा, काकाजी और पप्पाजी का है। ***योगीजी महाराज ने गोंडल में कहा था - तुम एक होकर रहोगे, तो पच्चीस साल मैं ज़्यादा रहूँगा...*** *हम यदि संप, सुहृद्भाव और एकता रखेंगे, दूसरों के लिए प्रार्थना करेंगे, तो अपने लिए प्रार्थना नहीं करनी पड़ेगी – ऐसा काकाजी और पप्पाजी कहते थे। अभी हम सब इस सूत्र के अनुसार वर्तते हैं, जी रहे हैं। लेकिन मेरे साथ जिनका संबंध है, पाँच-सात जनों का टोला हो, उसमें तो मैं संप, सुहृद्भाव, एकता रखता हूँ। पर, इसके साथ ही सारा* ***'गुणातीत समाज'*** *मेरा है, मैं इस 'गुणातीत समाज' का सभ्य हूँ,* ***मैं व्यक्तिगत रूप से न तो अक्षरविहारीस्वामी का हूँ न काकाजी-पप्पाजी-स्वामिजी-साहेब का हूँ, लेकिन मैं तो समग्र 'गुणातीत समाज' का सभ्य हूँ और यह 'गुणातीत समाज' मेरा है...*** *स्वामिनारायण का भक्त कैसा भी क्यों न हो, उसके साथ आत्मीयता का संबंध हो, उसके साथ लगाव हो, उसके साथ एकता कर सकें, उसे साथ-सहकार दे सकें, अपने स्वधर्म में रहते हुए उसके सहायक बन सकें...* ***तो वो हमने योगीजी महाराज, काकाजी और पप्पाजी का ऋण अदा किया कहा जाएगा। काकाजी-पप्पाजी ने हमारे लिए प्राण न्यौछावर किए हैं। खूब मेहनत करके सारा 'गुणातीत समाज' खड़ा किया है...***

माहात्म्य दर्शन कराते हुए **प.पू. भरतभाई** ◆ (ગુજરાતી : पढ़ो पृ. 17) ने खूब मर्म की बात कही–
'योगी परिवार' के हम सभी जानते हैं – साक्षी हैं कि सारे 'गुणातीत समाज' का सर्जन और उत्थान करने में काकाजी ने अपने बारे में कभी सोचा ही नहीं। अंत तक भागदौड़ करते रहे। हमारे राजुभाई भट्ट कई बार बाताते थे कि 1966 के बाद काकाजी महीने में मुश्किल से पंद्रह दिन ताड़देव रहते; पंद्रह दिन सोखड़ा, सांकरदा, विद्यानगर, अमदावाद, माणावदर के विचरण में जाते। यूँ उनका आना-जाना लगा ही रहता और तब ताड़देव बहुत कम रहते। 1985 में एक बार उन्होंने गणेशपुरी में हम सेवकों की एक शिविर रखी थी। वहाँ एक दिन काकाजी स्नान करके आ रहे थे कि राजुभाई उन्हें सामने मिले; तो ***काकाजी*** *ने उन्हें रोक कर पूछा–*

राजु, मैंने हमारी सारी संस्थाएँ खड़ी करी, सभी संस्थाओं का इतना कार्य किया, लेकिन तुम लोगों के लिए मैंने कुछ किया नहीं, ताड़देव के लिए भी कुछ नहीं किया। कोई आश्रम नहीं बनाया, न ही कोई व्यवस्था की। तो, तुझे ऐसा कुछ नहीं लगता कि काकाजी, हमारे लिए भी कुछ कर दो, हमारा भी कोई केन्द्र या व्यवस्था हो।

***राजुभाई** ने एकदम गद्‌गद् कंठ से **हाथ जोड़ कर कहा** –*

काकाजी! सारा समाज जो है – वह हमारा है और आपने ही सब कुछ तैयार किया है; सो हमें तो लगता नहीं कि आपने हमारे लिए कुछ किया नहीं है। आपने जो सारा अखिल समाज के लिए किया है, वह हमारा ही है न?

ऐसा कहते हुए उन्होंने बहुत अच्छी प्रार्थना की।

काकाजी की आँख में आसूँ आ गए कि वाह!

यही भावना काकाजी और पप्पाजी हम सभी में प्रगटाना चाहते हैं और ऐसी भावना हम में प्रगटे इस हेतु अक्षरविहारीस्वामिजी अपने जीवन से-कार्य से दर्शाते हैं...

तत्पश्चात् प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी एवं प.पू. दिनकरभाई ने प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के वरद् हस्तों **'शताब्दी कुंभ'** का अनावरण कराया। प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने यह कुंभ इस भावना से बनवाया है कि *बूंद-बूंद से सरोवर भरता है...* यूँ, सभी हरिभक्त अपनी श्रद्धा एवं गुंजाईश के मुताबिक, कुछ धनराशि इस कुंभ में डालते रहें। शताब्दी का मुख्य उत्सव जहाँ भी होगा, वहीं पर उनके द्वारा रोज़ाना थोड़ी-थोड़ी एकत्रित की गई इस राशि से सेवा की जा सकेगी। अनावरण के बाद पवई के **पू. हेमंतभाई मर्चंट** ने *'भाग्य खुल्या...'* भजन प्रस्तुत किया। और... फिर **बंधुजोड़ी शताब्दी** के निमित्त मंच पर विराजमान दिव्य स्वरूपों ने एवं बहनों के विभाग में दिव्य बहनों ने **केक कटिंग** की। केक पर मॅजिक मोमबत्तियाँ लगाई थीं, जो बुझाने पर बुझती नहीं

◆ ***ગુજરાતી :***

'યોગી પરિવાર'ના સહુ તો જાણે છે - સાક્ષી છે કે આખા 'ગુણાતીત સમાજ'નું સર્જન અને ઉત્થાન કરવામાં કાકાજીએ પોતાનો ક્યારે ય કોઈ જાતનો વિચાર કર્યો નથી. એ માટે એઓ ઠેઠ સુધી દોડતા રહ્યા છે. અમારા રાજુભાઈ ભટ્ટ ઘણી વાર વાતો કરતાં કે ૧૯૬૬ પછી કાકાજી મહીનામાં માંડ પંદર દિવસ તાડદેવ રહેતાં; પંદર દિવસ સોખડા, સાંકરદા, વિદ્યાનગર, અમદાવાદ, માણાવદરનું એમનું વિચરણ જ રહેતું. આવ-જાવ, આવ-જાવ કર્યા કરતાં. આમ, ત્યારે તાડદેવ બહુ ઓછું રહેતાં.

*૧૯૮૫માં એકવાર એમણે ગણેશપુરીમાં અમારી સેવકોની એક શિબિર રાખી હતી. ત્યાં એક દિવસ કાકાજી સ્નાન કરીને આવતા'તા. રાજુભાઈ ભટ્ટ એમને સામે મળ્યા; તો **કાકાજી**એ એમને એકદમ ઊભા રાખીને પૂછ્યું –*

રાજુ, મેં આપણી બધી સંસ્થાઓ ઊભી કરી, બધી સંસ્થાઓમાં આ બધું કાર્ય કર્યું, પણ મેં તમારા માટે કાંઈ કર્યું નથી, તાડદેવનું ય કાંઈ કર્યું નથી. કોઈ આશ્રમ સ્થાપ્યો નથી કે કોઈ વ્યવસ્થા નથી રાખી. તો, તને એવું કાંઈ લાગતું નથી કે કાકાજી, અમને પણ કાંઈ કરી આપો, અમારૂં પણ કોઈ કેન્દ્ર થાય કે વ્યવસ્થા થાય.

***રાજુભાઈ** તો એકદમ ગળગળા થઈ ગયા અને એમણે કાકાજીને **હાથ જોડીને કહ્યું** –*

કાકાજી! બધો આખો સમાજ છે – એ આપણો છે અને આપે જ બધું તૈયાર કર્યું છે, એટલે અમને તો એવું લાગતું નથી કે આપે અમારા માટે કાંઈ કર્યું નથી. આપે જે બધું આખા સમાજ માટે કર્યું છે, તે અમારૂં જ છે ને?

*એમ કહીને એમણે બહુ સરસ પ્રાર્થના કરી. **કાકાજીની આંખમાં આસું આવી ગયા કે વાહ!***

આ જે ભાવના છે એ કાકાજી અને પપ્પાજી આપણ સહુમાં આપવા માગે છે અને એવી ભાવના આપણામાં પ્રગટે એ માટે અક્ષરવિહારીસ્વામિજી એમના જીવનથી-કાર્યથી દર્શાવે છે...

–પ.પૂ. ભરતભાઈ

हैं। सो, उन्हें बुझाने से पहले **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** ने मानो सभी को सचेत किया–

इन मोमबत्तियों को बुझाने की हम कितनी भी कोशिश करें, लेकिन ये फिर से सुलग उठती हैं। इसी तरह इस 'बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव' में माया हमें किसी भी प्रकार से रोकने का प्रयत्न करे, फिर भी हमें पुनः तैयार हो जाना है, फिर से उसमें जुड़ जाना है। ये दीपक हमारा प्रतीक हैं।

केक कटिंग के बाद विभिन्न केन्द्रों के मुक्तों ने ब्रह्मस्वरूप काकाजी, ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी की मूर्तियों एवं प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी को हार अर्पण किए। **प.पू. दिनकरभाई** ने आशीर्वाद देते हुए कहा–

आज अक्षरविहारीस्वामिजी का प्राकट्य दिन है। उसमें उन्होंने सोने पे सुहागा करते हुए कितनी अच्छी बात रख दी कि उनका तो 80वाँ प्राकट्य दिन है, पर काकाजी और पप्पाजी दोनों का मिला कर कहें तो 200वाँ प्राकट्य पर्व मनाया गया है! यह कितनी बड़ी बात है... ***स्वामिजी ने अपना बर्थडे बदल कर काकाजी-पप्पाजी की शताब्दी का उत्सव मनाया। उनके रोम-रोम में काकाजी और पप्पाजी की महिमा है। काकाजी-पप्पाजी के लिए क्या न हो, ऐसी भावना है। 2017 में काकाजी-पप्पाजी का शताब्दी महोत्सव हम ऐसी दिव्यता और भक्तिभरे दिल से मनाएँ*** *कि ये स्वरूप राजी हो जाएँ...*

प.पू. गुरुजी •(ગુજરાતી : पढ़ो पृ. 19) ने खूब सोचने योग्य बात करते हुए कहा–

वशीभाई ने समैया की बातों की डोर मूल मुद्दे पर ला दी... ये सभी बातें हो रही थीं, तब मैं सोच रहा था कि ***हम ये बातें भले कितनी ही किया करें, लेकिन ये (हरिप्रसाद) स्वामी, अक्षरविहारीस्वामिजी और साहेब टोटली जब तक इसे नहीं उठा लेंगे, तब तक हमारा बेड़ा पार नहीं होगा...*** *2017 में यह उत्सव* ***'भव्यता से'*** *मनाएँ इसका कोई अर्थ नहीं। मनाना है, पर* ***दिनकरभाई में से महाराज बोल गए कि 'दिव्यता से-दिव्यभाव से' मनाना है। भव्यता से मनाएँ, पर हमारे बीच अलगाव की कहीं कोई कणी न रह जाए- यह भारी मुद्दे का काम है।*** *सो,* ***स्वामी*** *से तो मेरी इतनी प्रार्थना है कि* ***आप ऐसा मार्गदर्शन करते रहना और... हमें संभालना।***

सत्संग में जाहो-जलाली बढ़ी, सत्संग भी खूब बढ़ा; लेकिन जैसे गुणातीतानंदस्वामी की बातों में है कि दस हज़ार गुणा सत्संग बढ़ेगा, पर ***'यह साधु'*** *नहीं मिलेगा... इसका जवाब देते हुए काकाजी ने बताया था कि लौकिक-अलौकिक वैभव की चकाचौंध में* ***'गुणातीत साधु'*** *गुम हो जाएगा - नहीं दिखेगा - ढूँढने पर कहीं भी नज़र नहीं आएगा।*

बड़े पुरुष ने किसी को कोई चीज़ दी हो, तो उसे 'प्रसादी' जान कर उनकी 'स्मृति' के रूप में कैसे खूब संभाल कर रखते हैं? इसी प्रकार, भरतभाई ने बात की कि 1966 के बाद काकाजी बहुत मुश्किल से ताड़देव में रहते और खूब ज़हमत उठा कर 'गुणातीत समाज' की नींव पक्की की। आज हमें इस ***'गुणातीत समाज'*** *- जो कि* ***'काकाजी-पप्पाजी'*** *की एक और अद्वितीय* ***'जीवंत स्मृति'*** *है, उसे अखंड रखना है।* ***'गुणातीत समाज' रहेगा तो हम काकाजी–पप्पाजी को चिरंजीव रख सकेंगे।*** *वर्ना* ***अलग-अलग रजवाड़ों की भाँति यदि***

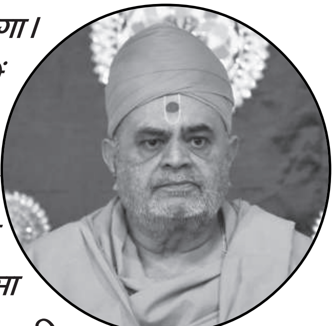

हम बंट जाएँगे, तो 'गुणातीत समाज' का अस्तित्व ही मिट जाएगा। फलतः आगे जाकर काकाजी – पप्पाजी की भी कोई पहचान नहीं रहेगी... सो, हम ऐसा एक प्लॅटफॉर्म तैयार करके जाएँ।

आज बॅप्स के मंदिरों में दाखिल होते ही ख्याल पड़ जाता है कि **'अक्षरपुरुषोत्तम संस्था' शास्त्रीजी महाराज व योगीजी महाराज का सर्जन है। बॅप्स के वे 'आद्य सर्जक' हैं। यूँ, अपने हर एक केन्द्र में ऐसा दर्शन - ऐसी गूंज होनी चाहिए कि हर एक को आते ही पता चल जाए कि काकाजी - पप्पाजी इस सर्जन की नींव में हैं। अक्षरविहारीस्वामी इसके लिए लग पड़े हैं...** स्वामी हमारे अंदर ऐसा कुछ भर दो कि हम हमारे अस्तित्व को भूल जाएँ - हमारी 'अस्मिता' न रहे। काकाजी अंग्रेजी में कहते कि 'एग्ज़िस्टन्शियल अवेरनेस' - जब तक होगी, तब तक अलगाव रहेगा... आज हमारे लिए काकाजी और पप्पाजी की जगह स्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी और साहेब हैं। तो, इन तीनों में हमें ऐसा भाव रहे कि हमारे लिए ये काकाजी और पप्पाजी हैं और वे भी हमें ऐसा एहसास कराएँ – ऐसी प्रतीति कराएँ...

● **ગુજરાતી :**

વશીભાઈએ સમૈયાની વાતનો દોર મૂળ મુદ્દા ઉપર લાવી દીધો... આ બધી વાત ચાલતી હતી, ત્યારે હું વિચારતો'તો કે **અમે આ વાત ગમે તેટલી કર્યા કરીએ, પણ આ (હરિપ્રસાદ) સ્વામી, અક્ષરવિહારીસ્વામિજી અને સાહેબ એને ટોટલી નહીં ઉપાડી લે, ત્યાં સુધી આપણો સક્કરવાર નહીં વળે...** ૨૦૧૭માં આ સમૈયો **'ભવ્યતાથી'** ઊજવીએ એનો કોઈ અર્થ નથી. ઊજવવો છે, પણ **દિનકરભાઈમાંથી મહારાજ બોલી ગયા કે 'દિવ્યતાથી-દિવ્યભાવે' ઊજવવો છે. ભવ્યતાથી ગમે એટલો ઊજવીએ, પણ આપણી વચ્ચે જુદારાની કોક કણી ક્યાંક રહી ન જાય એ ભારે મુદ્દાનું કામ છે.** એટલે, **સ્વામી** પાસે મારી એટલી પ્રાર્થના કે તમો અમને **એવું માર્ગદર્શન કરતા રહજો** ને... અમારૂં ધ્યાન રાખજો.

સત્સંગમાં જાહોજલાલી વધી, સત્સંગ પણ ખૂબ વધ્યો ; પણ જેમ ગુણાતીતાનંદસ્વામીની વાતોમાં છે કે દસ હજાર ગણો સત્સંગ વધી જશે, પણ **'આ સાધુ'** નહીં મળે... આનો જવાબ આપતાં કાકાશ્રીએ જણાવેલું કે લૌકિક - અલૌકિક વૈભવના અંજારામાં **'ગુણાતીત સાધુ'** ખોવાઈ જશે - નહીં દેખાય - નહીં જડે...

મોટા પુરૂષે કોકને કોઈ વસ્તુ આપી હોય, તો એને 'પ્રસાદી' માનીને એમની 'સ્મૃતિ'રૂપે કેવી ખૂબ સાચવીને રાખીએ છીએ ? એમ, ભરતભાઈએ વાત કરી કે ૧૯૬૬ પછી કાકાજી માંડ તાડદેવ રહેતા અને ખૂબ ભીડો વેઠીને 'ગુણાતીત સમાજ'નો પાયો પાકો કર્યો. આજે આ **'ગુણાતીત સમાજ'** – જે 'કાકાજી - પપ્પાજી'ની એક અને અદ્વિતીય **'જીવંત સ્મૃતિ'** છે, એને આપણે અખંડ રાખવાનો છે. **'ગુણાતીત સમાજ' રહેશે તો આપણે કાકાજી-પપ્પાજીને ચિરંજીવ રાખી શકીશું.** બાકી, **જૂદા-જૂદા રજવાડાઓની માફક જો આપણે વેંચાઈ જઈશું, તો 'ગુણાતીત સમાજ'નું અસ્તિત્વ જ નહીં રહે. પરિણામે, આગળ જતાં કાકાજી અને પપ્પાજીની પણ કોઈ ઓળખાણ નહીં રહે...** એટલે, આપણે એવું એક પ્લૅટફૉર્મ તૈયાર કરીને જઈએ.

આજે 'બૅપ્સ'ના મંદિરોમાં દાખલ થતાં જ ખ્યાલ આવી જાય છે કે **'અક્ષરપુરૂષોત્તમ સંસ્થા' – એ શાસ્ત્રીજી મહારાજ અને યોગીજી મહારાજનું સર્જન છે. બૅપ્સના એઓ 'આદ્ય સર્જક' છે. તેમ આપણા દરેક કેન્દ્રમાં એવું દર્શન હોવું જોઈએ - એવો પડઘો પડવો જોઈએ કે આવનારને ખ્યાલ જ આવી જાય કે કાકાજી - પપ્પાજી આ સર્જનના પાયામાં છે. અક્ષરવિહારીસ્વામિજી એ માટે મંડયા છે...** સ્વામી એવું કંઈ ભરી દો કે અમે અમારા અસ્તિત્વને ભૂલી જઈએ - અમારી 'અસ્મિતા' ન રહે. કાકાજી અંગ્રેજીમાં કહેતાં કે 'ઍગ્ઝિસ્ટન્શિયલ અવેરનેસ' – જ્યાં સુધી હશે, ત્યાં સુધી જુદારો રહેશે... આજે આપણા માટે કાકાજી અને પપ્પાજીની જગ્યાએ સ્વામિજી, અક્ષરવિહારીસ્વામિજી અને સાહેબ છે. તો, એ ત્રણેયમાં આપણને એવો ભાવ રહે કે અમારા કાકાજી અને પપ્પાજી અહીં છે અને એઓ પણ આપણને એવી પ્રતીતિ કરાવે... **– પ.પૂ. ગુરુજી**

प.पू. निर्मलस्वामिजी ने आशीर्वाद देते हुए कहा–

*...**'योगी परिवार' के स्तंभ काकाजी-पप्पाजी हैं, इसमें कोई शंका नहीं... तुम्हारी श्रद्धा संपूर्ण रूप से किसी भी स्वरूप में हो, पर दूसरे स्वरूप को गौण नहीं करना... मूल चीज़ भूलनी नहीं चाहिए।** कोई वृक्ष भले ही कितना सुंदर व हरियाला हो, लेकिन वह यह नहीं कह सकता कि उसे मूल की जरूरत नहीं है। तो, मूल को संभाल कर काम करना है। **किसे पता नहीं कि हमारा मूल कौन है ? तो, इस बात को स्वीकारना।** किसी को गौण करना नहीं। सभी पूजनीय हैं... स्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी और गुरुजी जो भी निर्णय लें, वह हमें सर्व मत से मान्य है...*

तत्पश्चात् दिल्ली के मुक्त समाज की ओर से **पू. देवेशजी** ने **ब्रह्मस्वरूप काकाजी-पप्पाजी** की मूर्ति को हार अर्पण किया। **पू. सुहृद्स्वामी** ने **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** को और **पू. आशिष** ने **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** को हार अर्पण किया। तभी वहाँ उपस्थित संतों की प्रार्थना पर प.पू. स्वामिजी एवं प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने साथ-साथ खड़े रह कर सबको अनेरी मूर्ति दी। पू. बिम्पलभाई द्वारा **सांकरदा-अक्षरज्योत** में भगवान भजती बहनों द्वारा भेजा हार स्वीकार करके प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने प्राकट्य पर्व की **केक कटिंग** की।

अंत में आशिष देते हुए **प.पू. स्वामिजी** ने कहा–

*...मंगलकारी शुभ दिन एक ही संकल्प करना कि माँ जैसे साधु के पास सरलता से वर्तना... बापा एक ही बात कहते रहे– 'संप, सुहृद्भाव, एकता' रखनी। साधकों के जीवन में प्रसंग तो आने वाले ही हैं। स्वामिजी का प्राकट्य दिन मनाने के लिए जब हम इकट्ठे हुए हैं, तो हमें एक दृढ़ता करनी है कि 'संप, सुहृद्भाव, एकता' – **बापा के इस सनातन सूत्र में** – हम रूम में, मंदिर में या कहीं भी हों – **हमें डूबे ही रहना है।** किसी भी संजोग में हमें बापा को राज़ी करना है। **जैसे-जैसे संप, सुहृद्भाव, एकता से वर्तते जाएँगे, वैसे-वैसे हठ, मान, ईर्ष्या के भाव टलते जाएँगे। यह एक सीधा मार्ग है...** हम सभी को जाग्रत रहना है... सबके साथ खूब मिठास से वर्तना... स्वामिजी को कोई अपेक्षा नहीं है, उनके साथ मैत्री बढ़ाते जाना... **स्वामिजी के साथ खुले दिल से संबंध बढ़ाते जाना। उन्होंने काकाजी-पप्पाजी को कभी 'नो' शब्द कहा नहीं है।** हमें भी संतों को 'नो' शब्द नहीं कहना है। फलस्वरूप संबंध हो जाएगा।*

विधात्री के लेख पर मेख मारे वह – साधु!
प्रारब्ध और प्रकृति को टाले वह – साधु!
हमारे हठ, मान, ईर्ष्या के भावों को निकाल दे
और ठंडक प्रदान करे वह – साधु!
हमारी आत्मा की यात्रा प्रभु की ओर चलाता रहे वह – साधु!

और... प.पू. स्वामिजी के आशीर्वाद के साथ ही 'बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव' का तृतीय चरण एवं प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी का 80वाँ प्राकट्य पर्व सम्पन्न हुए..

'परावाणी' से अनमोल चिंतनकणिकाएं

* भगवान और बड़े साधु के पास अपनी बात-अपनी समझ छोड़ दें। वे तो अति दयालु हैं, खूब रक्षा करेंगे।
* संत का **'प्रसंग'** निरंतर रखना चाहिए। निरंतर यानी क्या? अंतराय निकाल देना, वो निरंतर प्रसंग कहलाता है। **'संग'** और **'प्रसंग'** में क्या फर्क? माला का धागा टूट जाए तो सभी मनके अलग हो जाते हैं। इसे **'संग'** में रहे कहा जाए और तीन धागे के बल से एक धागा बनता है, इसे **'प्रसंग'** कहा जाए। सत्पुरुष के साथ अंतराय टूट गया हो, तो उससे कुछ कहते-सुनते हुए डर नहीं लगता।
* संत की किसी भी बात से हमारा अंतर खुल सकता है। फिर भले ही मन में तै किया हो कि मुझे मानना नहीं है, समझना नहीं है, करना नहीं है या संत से कोई बात नहीं करनी है, लेकिन संत की बातों में ऐसा कोई प्रसंग निकल आए कि जिससे हमारे अंतर के द्वार खुल जाएँ।
* कई पूछते हैं कि स्वामी को 'निर्दोष' मानते हैं, फिर भी स्वामी जैसे गुण हम में क्यों नहीं आते? इसका कारण यह है कि वे **'जैसे हैं वैसे'** पहचानने में फ़र्क है।
* सत्पुरुष की 'कृपादृष्टि' हो जाए तो मन के तालमेल छूट जाते हैं और हमें 'ऐसा-वैसा, जैसा-तैसा' चल जाता है।
* मोर पर गुणातीत की दृष्टि पड़ी, तो सौ गोली के धमाके होने के बावजूद भी वो सूतभर खिसक जाता और उसे गोली लगती नहीं थी।
* अक्षरधाम की बातें समझ में आती हैं और ऐसी बातें कर सकते हैं, इसे भगवान और इस संत का 'अनुग्रह' कहा जाए। यदि भगवान और बड़े पुरुष का 'अनुग्रह' न हुआ हो, तो ये बातें समझ में ही नहीं आ सकतीं।
* 'अक्षरधाम' हमारे करीब हो गया है, क्योंकि ये भगवत्स्वरूप विभूति मनुष्य जैसी बन कर यहां आई है।
* साथ में रह कर महिमा समझनी बहुत बड़ी गुत्थी है। **साथ में रह कर महिमा नहीं समझ पाते। लेकिन हम इस गुत्थी को लाँघ गए हैं, तो आनंद कर रहे हैं।**
* यदि साधु का समागम हो जाए, तो गुत्थी लाँघ सकते हैं। पर, समागम किए बिना हमारा अंतर पलट नहीं सकता।
* **महिमा समझी हो, तो भक्तों की कसनी सही जा सकती है।**
* भगवान और संत हमें ऐसे निभा लेते हैं कि हमें अभाव-अवगुण नहीं आए। ऐसी ही क्रिया करते हैं, सो निभ गए हैं; परंतु कसनी में यदि लें, तो 'जय... स्वामिनारायण'! पिस जाएँगे।
* सारे सत्संग में (यदि हमें) दिव्यभाव-एकता हो जाए, तो समझना कि हमारे भीतर 'माया' नहीं है।
* जब तक आशीर्वाद न मिले हों, तब तक हमें जीव में शांति नहीं होती! आशीर्वाद मिलने के बाद हृदय में सुख का अनुभव होता है। फिर, किसी का अभाव नहीं आता, अवगुण दिखाई नहीं देता। हर प्रकार से सुविधा!

* व्यवहार ऊंट की पीठ (बैठक) जैसा है। उस पर तो डांवाडोल हो ही जाएँगे। यदि 'आसरा' और 'निश्चय' दृढ़ हो तो भगवान हमारी सहाय करते हैं।
* **जीव को कभी भी गिरने नहीं देते–यह भगवान की दृढ़ता है और हम पर उनकी दया है।**
* **बड़े पुरुष की** दृष्टि यदि जीव के ऊपर से थोड़ी-सी भी पलट जाए, तो अंतःकरण चंडाल जैसा हो जाए और सुख भी न मिले। उनकी **कृपादृष्टि बनाए रखने के लिए 'विवेक' से पेश होना।**
* **भगवान और संत को राज़ी कर लें, तो हृदय के द्वार खुल जाएँ।**
* हमने यदि (संत की) प्रसन्नता पा ली हो, तो पाताल से फूटे पानी की भाँति बातों का प्रपात बहने लगे, हमारे द्वारा भगवान बोल जाएँ... यदि हम कोई बात न जानते हों, तो स्वामी हम में प्रवेश करके बोल जाएँ और हमारा अज्ञान टाल दें।
* सहजानंदस्वामी 'पुरुषोत्तम'-यह सत्य हैं। उनकी मरज़ी के बिना किसी का कुछ नहीं चलता। उन्हें रखें और धारें; सब किया-कराया तो उन्हीं का होता है – तो वे आशीर्वाद देंगे और तभी हमारा काम सिद्ध होगा, लेकिन अपनी मरज़ी से माला फेर-फेर कर तोड़ भी देंगे, तो भी कोई काम नहीं बनेगा–**यह भी एक मर्म है।**
* श्रीजी महाराज के सिवा हमें किसी को आगे नहीं रखना है, सिर्फ उनके आसरे रहना है।
* (सत्पुरुष की) मरज़ी क्या? दिव्यभाव!!
* भले कैसा ही विपरीत माहौल बने; लेकिन भजन-कीर्तन करने लग पड़ेंगे तो कठिन हालात टिक नहीं पाएँगे।

(शेष अगले अंक में)

Statement about ownership and other particulars about newspaper —
'भगवत् कृपा' (Form IV Rule 8)

1. Place of Publication	:	Yogi Divine Society, 'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052
2. Periodicity of its Publication	:	Bi-Monthly
3. Printer's Name	:	Prabhaker Rao
4. Nationality	:	Indian
Address	:	'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052
5. Publisher's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	
6. Editor's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	
7. Owner's Name	:	Yogi Divine Society
Nationality	:	Indian
Address	:	'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052

I, Prabhaker Rao, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-
PRABHAKER RAO
Signature of Publisher

Date: 3 March, 2015

दिव्य स्मृतियाँ ...

निमंत्रण

आइए... आइए... सपरिवार इष्ट मित्रमंडल सहित आइए...
'ताड़देव' परिसर में 'योगी परिवार' के हम सभी इकट्ठे होकर,
आगामी 'बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव' के उपक्रम से
'योगी परिवार आनंदोत्सव' के रूप में
हमारे प्रिय प.पू. गुरुजी का 78वाँ प्राकट्योत्सव
13 मार्च 2015, शुक्रवार–सायं 5:30 बजे से
प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी,
प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. निर्मलस्वामिजी,
प.पू. दिनकरभाई एवं प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई
जैसी दिव्य विभूतियों की निश्रा में मनाएँ...

इन्दु मल्कानी
(गुणातीत कुनबा, दिल्ली)

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 07.3.'15, शनिवार – ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का स्वधामगमन दिन
(2) दि. 13.3.'15, शुक्रवार – प.पू. गुरुजी का 78वाँ प्राकट्य दिन,
ताड़देव मंदिर में प्राकट्योत्सव – सायं 5:30 बजे से...
(3) दि. 17.3.'15, मंगलवार – एकादशी – व्रत
(4) दि. 21.3.'15, शनिवार – चैत्री नूतन वर्षारंभ, 'गुडी पड़वा'
(5) दि. 28.3.'15, शनिवार – रामनौमी, **भगवान श्री स्वामिनारायण जयंती**, व्रत
(6) दि. 31.3.'15, मंगलवार – एकादशी – व्रत
(7) दि. 02.4.'15, गुरुवार – गुरुहरि योगीजी महाराज का भागवती दीक्षा दिन
(8) दि. 04.4.'15, शनिवार – पूर्णिमा, श्री हनुमान जयंती
(9) दि. 15.4.'15, बुधवार – एकादशी – व्रत
(10) दि. 21.4.'15, मंगलवार – अखात्रीज
(11) दि. 22.4.'15, बुधवार – गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज की अंतर्धान तिथि
(12) दि. 29.4.'15, बुधवार – एकादशी – व्रत
(13) दि. 02.5.'15, शनिवार – नृसिंह जयंती, फलारी व्रत
(14) दि. 14.5.'15, गुरुवार – एकादशी – व्रत
(15) दि. 15.5.'15, शुक्रवार – **ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज की जयंती**
प.पू. गुरुजी की भागवती दीक्षा तिथि

R.N.I. 28971/ 77 ***(Air Mail)***
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 4709 1281
Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052